M.A - II SEMESTER Paper - CC - V 01

प्राकृत काव्य साहित्य का इतिहास

इकाई - 4.

चम्पू काव्य

Q(1) — चम्पूकाव्य के परिभाषा एवं स्वरूप और उनके लक्षण घटित का विवरण करें।

Ans —

चम्पूकाव्य के परिभाव → चम्पू की शास्त्रीय परिभाषा यह है कि जिस काव्य में वस्तु और दृश्यों का रूप चित्रण गद्य में किया गया हो और उसकी पुष्टि के हेतु भावों या विभावादि का पद्य में निरूपण हो, वह — चम्पू काव्य है। कथावस्तु का उपक्रम भी महाकाव्यों एवं चरित या पुराण - काव्यों की अपेक्षा भिन्न शैली में किया जाता है तथा गद्य और पद्य दोनो का परस्पर ऐसा सम्बन्ध रहता है जिससे किसी एक के एकाध अंश के निकाल देने पर अधूरापन प्रतीत होने लगता है।

— चम्पू के काव्यों - शास्त्रीय काव्यों का लक्षण घटित हो जो इस प्रकार है।

(I) दृश्यों और वस्तुओं के चित्रण में प्रायः गद्य का प्रयोग किया गया है।

(II) विभाव, अनुभाव और संचारी भावों का चित्रण प्रायः पद्यों में ही किया है।

(III) गद्य और पद्य कथानक के सुश्लिष्ट अवयव है। दोनो में से किसी एक के एकाध अंश के निकाल देने पर कथानक में विश्रृंखलता आ जाती है। अतः इसमें संश्लिष्ट रूप से गद्य-पद्य का उपक्रम पाया जाता है।

(IV) शैली की दृष्टि से कवि ने — चम्पू विधा का अनुकरण किया है। यहाँ शैली से तात्पर्य उन प्रक्रिया

से है जिसके द्वारा कवि ने रूप चित्रों को क्रियादि द्वारा रसमय बनाया है। महाकाव्यों में पद्य-बहुलता के कारण दृश्य और भावों के चित्रण में शैली भेद परिलक्षित नहीं होता। कथा और आख्यायिकाओं में गद्यांश की प्रमुखता रहने से भावों का निरूपण भी गद्य में रहता है, जिससे दृश्य और भावों की अभिव्यञ्जना में शैलीगत भेद दिखलायी नहीं पड़ता।
परन्तु चम्पू काव्यों में दृश्य और भावों के चित्रण में शैलीगत भिन्नता की सीमा रेखा निर्धारित की जा सकती है। इस प्रकार का शैली भेद कुवलयमाला में है।

(v) वस्तुविन्यास में प्रबन्धात्मकता आद्योपान्त व्याप्त है। काव्यों के परिवेश में ही घटनावलि को प्रस्तुत किया

(vi) धर्मतत्व के रहने पर भी काव्य की आत्मा दबी नहीं है कवि ने काव्यत्व का पूरा निर्वाह किया है।

(vii) चरित, आख्यान, पात्रों की चेष्टाएँ, नायक या नायिका के क्रियाकलाप आलंकारिक रूप में प्रस्तुत किये गये है।

(viii) अन्योक्तियों द्वारा चारित्रों की व्यंजना की है।